30-08-12

ले गए। | करने लगे एवं शोर मचाने पर जान से तलाश शुरू कर दी हैं। हत्या उसने गांव नगूरां निवासी मामले दर्ज है।

दूरदर्शन की टीम ने शूटिंग को दिया अंतिम रूप, 165 देशों में होगा प्रसारण

अब विदेशों में भी जलेगी कीट ज्ञान की मशाल

आज समाज नेटवर्क

जींद। बेजुबान कीटों को बचाने के लिए जिले के निडाना गांव की धरती से उठी आवाज अब विदेशों में भी गूंजेगी। किसानों की आवाज को दूसरे देशों तक पहुंचाने में दिल्ली दूरदर्शन की टीम माध्यम बनी हैं। दिल्ली दूरदर्शन की टीम अपने कृषि दर्शन कार्यक्रम की रिकार्डिंग के लिए मंगलवार को निडाना गांव के किसानों के बीच पहुंची थी। टीम ने मंगलवार को निडाना गांव में किसान खेत पाठशाला तथा बुधवार को ललीतखेड़ा की महिला किसान खेत पाठशाला की गतिविधियों को कैमरे में शूट किया। बुधवार को बूंदाबांदी के बीच भी कार्यक्रम की शूटिंग चली और टीम ने ललीतखेड़ा की महिला किसान खेत पाठशाला में शूटिंग को अंतिम रुप दिया। दिल्ली दूरदर्शन द्वारा 4 सितंबर को सुबह 6.30 बजे कार्यक्रम का प्रसारण किया जाएगा और यह कार्यक्रम 165 देशों में प्रसारित होगा।

निडाना गांव के किसानों द्वारा जलाई गई कीट ज्ञान की मशाल अब देश ही नहीं बल्कि विदेश के किसानों की राह का अंधेरा दूर कर उन्हें एक नया रास्ता दिखाएगी। इस रोशनी को विदेशों तक पहुंचाने के लिए दिल्ली दूरदर्शन की टीम पिछले दो दिनों से अपने पूरे तामझाम के साथ निडाना में डेरा डाले हुए थी। दूरदर्शन की इस टीम में रिपोर्टर विकास डबास, कैमरामैन सर्वेश व राकेश के अलावा 84 वर्षीय वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डा. आरएस सांगवान भी मौजूद थे। डा. सांगवान ने निडाना में चल रही किसान खेत पाठशाला में पहुंचकर कीट कमांडो किसानों के साथ सीधे सवाल-जवाब किए और दूरदर्शन की टीम ने उनके अनुभव को अपने कैमरे में कैद किया। अलेवा से आए किसान जोगेंद्र ने कृषि वैज्ञानिक को अपने अनुभव के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि वह 1988 से खेतीबाड़ी के कार्य से जुड़ा हुआ है। खेतीबाड़ी के कार्य से जुड़ने के साथ ही उसने अपने खेतीबाड़ी के सारे खर्च का रिकॉर्ड भी रखना शुरू किया हुआ है। 1988 से लेकर 2011 तक वह अपने खेतों में 70 लाख के पेस्टीसाइड डाल चुका है, लेकिन इस बार उसने निडाना के किसानों के साथ जुड़ने के बाद अपने खेत में एक छटांक भी कीटनाशक नहीं डाला है। निडानी के किसान जयभगवान ने बताया कि वह 14 वर्ष की उम्र से ही खेती के कार्य में लगा हुआ है। जयभगवान ने बताया कि पिछले दो वर्षों से उसने इस मुहिम से जुड़ने के बाद कीटनाशकों का प्रयोग बिल्कुल बंद कर दिया है। किसान रोशन ने बताया कि वह 10-12 एकड़ में खेती करता है, लेकिन वह अपने खेत में सुबह पांच बजे से आठ बजे तक सिर्फ तीन घंटे ही काम करता है। इसके बाद अपनी ड्यूटी पर चला जाता है। रोशन ने बताया कि अधिक पेस्टीसाइड के प्रयोग से पैदावार में बढ़ोत्तरी नहीं होती। पैदावार बढ़ाने में दो चीजें सबसे जरुरी हैं। पहला तो सिंचाई के लिए अच्छा पानी और दूसरा खेत में पौधों की पर्याप्त संख्या। अगर खेत में पौधों की पर्याप्त संख्या होगी तो अच्छी पैदावार निश्चित है। किसान अजीत ने बताया कि उसके खेत में इस वर्ष शाकाहारी व मांसाहारी कीटं भरपूर संख्या में मौजूद हैं, लेकिन इन कीटों से उसकी फसल को रत्ती भर भी नुकसान नहीं हुआ है। इसके बाद बुधवार को टीम ललीतखेड़ा गांव में महिला किसान पाठशाला में पहुंची और यहां महिलाओं से भी उनके अनुभव के बारे में जानकारी जुटाई।

कृषि वैज्ञानिक ने थपथपाई किसानों की पीठ

टीम के साथ आए कृषि वैज्ञानिक डॉ. आरएस सांगवान ने किसानों द्वारा शुरू किए गए इस कार्य की खूब सराहना की। किसानों की पीठ थपथपाते हुए सांगवान ने कहा कि उनकी यह मुहिम एक दिन जरुर शिखर पर पहुंचेगी और दूसरे किसानों को राह दिखाएगी। उन्होंने कहा कि आज मौसम में जो परिवर्तन आ रहे हैं, वह सब प्रकृति के साथ हो रही छेड़छाड़ का ही नतीजा है।

29-08-12

भ्रम को दूर करने के लिए कीट ज्ञान एकमात्र द्वार

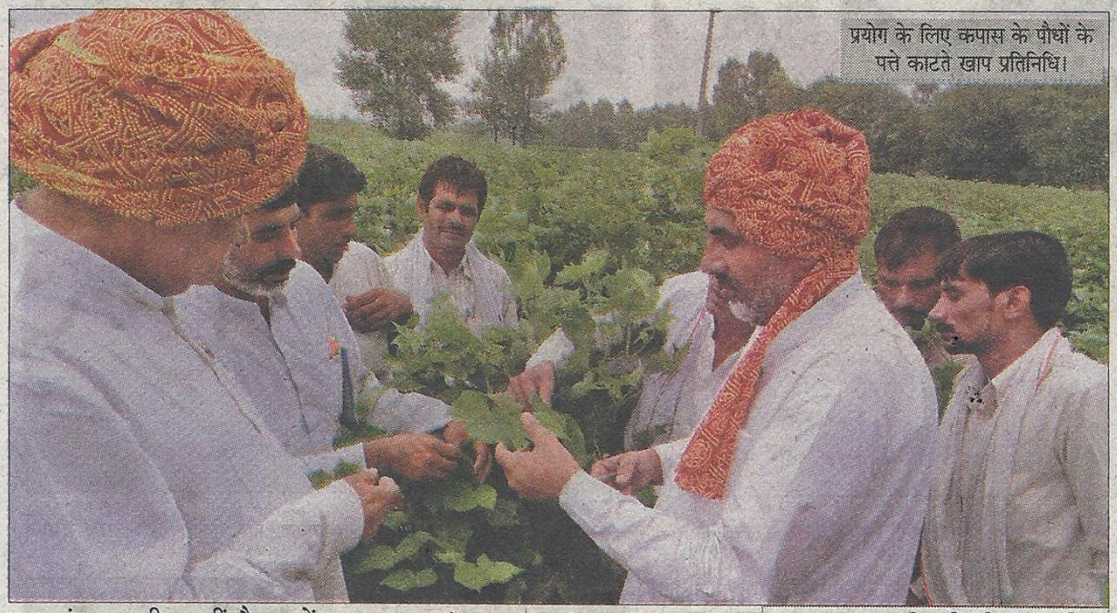

प्रयोग के लिए कपास के पौधों के पत्ते काटते खाप प्रतिनिधि।

खाप पंचायत की 10वीं बैठक में मौजूद खाप प्रतिनिधियों ने किसान-कीट विवाद पर किया मंथन

आज समाज नेटवर्क

जींद। हमारे बुजुर्गों से हमें जो मिला है, क्या वह सब कुछ हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को दे पाएंगे? आज यह सवाल हमारे सामने एक चुनौती बनकर खड़ा है। अगर फसलों में पेस्टीसाइड का प्रयोग इसी तरह बढ़ता रहा तो हम आने वाली अपनी पुश्तों को बंजर जमीन व दूषित पानी के साथ-साथ कई प्रकार की लाईलाज बीमारियां पैतृक संपत्ति के तौर पर देकर जाएंगे।

देश में बीटी के प्रचलन से पहले किसान के पास देसी कपास की 34 किस्में होती थी। लेकिन 2002 में बीटी के प्रचलन के बाद से अब तक इन 10 वर्षों में हम अपनी देसी कपास की इन 34 किस्मों को खो चुके हैं। जो भविष्य में हमारे सामने आने वाली एक भयंकर मुसीबत की आहट है। यह बात अखिल भारतीय जाट महासभा के राष्ट्रीय महासचिव युद्धवीर सिंह ने मंगलवार को निडाना गांव के खेतों में किसान खेत पाठशाला के दौरान पंचायत में किसान-कीट विवाद की सुनवाई के दौरान कही। पंचायत की अध्यक्षता बरहा कुलां बारहा के प्रधान एवं सर्व खाप महापंचायत के संचालक कुलदीप ढांडा ने की। इस अवसर पर पंचायत में अखिल भारतीय जाट महासभा के अध्यक्ष ओमप्रकाश मान, दिल्ली 360 पालम के प्रधान रामकरण सोलंकी, महम चौबिसी के प्रधान धर्मबीर केशव, प्रसिद्ध समाजसेवी देवव्रत ढांडा, राममेहर मलिक, प्रगतिशील किसान क्लब के सदस्य राजबीर कटारिया भी विशेष रूप से मौजूद थे।

पंचायत की शुरूआत के साथ ही किसानों ने अपने रुटीन के कार्य को जारी रखते हुए कपास के पौधों पर कीटों की गिनती कर कीट बही खाता तैयार किया। आस-पास के गांवों से आए सभी कीट मित्र किसानों ने भी अपने-अपने खेत में मौजूद कीटों का आंकड़ा बही खाते में दर्ज कराया। किसान रामदेवा ने बताया कि कपास की फसल में कृषि वैज्ञानिक रस चूसने वाले कीट सफेद मक्खी, हरा तेला व चूरड़े को सबसे खतरनाक मानते हैं। लेकिन अगर वास्तविकता पर नजर डाली जाए तो ये तीनों मेजर कीट कपास के पौधे से सिर्फ रस ही चूसते हैं, जिससे कपास की फसल पर कोई ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। इन कीटों को कंट्रोल करने के लिए किसी कीटनाशक की आवश्यकता नहीं है। इन कीटों को खाने के लिए कपास की फसल में कई किस्म के मांसाहारी कीट मौजूद होते हैं। सिवाहा से आए किसान अजीत ने बताया कि किसान भय व भ्रम का शिकार है और इसीलिए भ्रमित होकर डर के मारे फसल में कीटनाशकों का प्रयोग करता है। इस भय व भ्रम को दूर करने के लिए किसानों को कीटों की पहचाना होना जरुरी है। जब तक किसानों के पास अपना खुद का अनुभव या ज्ञान नहीं होगा तब तक किसान कीटनाशकों की इस भूल-भुलैया से बाहर नहीं निकल पाएगा। इस दौरान किसानों ने अपने प्रयोग को आगे बढ़ाते हुए पाठशाला में आए सभी खाप प्रतिनिधियों से पांच पौधों के तीसरे हिस्से के पत्ते कटवाए। पाठशाला के समापन पर सभी खाप प्रतिनिधियों को पगड़ी बांधकर व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

आकाशवाणी की टीम ने भी बांटे किसानों के अनुभव

निडाना के किसानों की आवाज को देश के अन्य किसानों तक पहुंचाने के लिए आकाशवाणी रोहतक की टीम भी किसानों के बीच पहुंची। पंचायत के समापन के बाद आकाशवाणी रोहतक से आए सीनियर अनाउंसर सम्पूर्ण भाई ने सभी किसानों से उनके अनुभव पर बातचीत की। आकाशवाणी ने इस पूरे कार्यक्रम का रेडियो पर 50 मिनट तक लाइव चलाकर देश के अन्य क्षेत्र के किसानों को भी इस मुहिम से रू-ब-रू करवाया। निडाना व ललीतखेड़ा से आई महिलाओं ने कीटों पर तैयार किए गए गीत सुनाकर सभी श्रोताओं का मनोरंजन भी किया और उन्हें भी बिना कीटनाशक रहित खेती के लिए प्रेरित किया। 50 मिनट के इस कार्यक्रम के दौरान निडाना के किसानों ने फसल में पाए जाने वाले शाकाहारी व मांसाहारी कीटों पर गहनता से चर्चा की।

27-08-12

डा. ओमकार चन्द्र जगपाल
गुप्त व प्रगट रोगों के विशेषज्ञ
शाम को फोन पर निश्चित समय लेकर मिलें
Note : We Do Not Have Any Clinic Or Branch Anywhere
Evening by Appointment
Email : healthclinic_herbalmagic@yahoo.in
SUNDAY CLOSED

जागरूक होंगे किसान

निडाना और लली तखेड़ा के किसान दूरदर्शन के माध्यम से देश के किसानों को सिखाएंगे गुर

नरेंद्र कुंडू

जींद। निडाना व लली तखेड़ा गांव के किसान अब देश के अन्य क्षेत्रों में बैठे किसानों को खेती-किसानी के गुर सिखाएंगे। ये किसान टीवी के माध्यम से अन्य किसानों के साथ अपने अनुभव सांझा कर उन्हें कीट प्रबंधन के लिए प्रेरित कर बिना कीटनाशकों का प्रयोग किए अधिक उत्पादन लेने के टिप्स देंगे। इनके इस काम में निडाना व लली तखेड़ा की कीट मित्र महिला किसान भी इनका पूरा सहयोग करेंगी। किसानों की इस मुहिम को देश के दूर-दराज क्षेत्र के किसानों तक पहुंचाने के लिए दिल्ली दूरदर्शन की टीम ने अपना हाथ आगे बढ़ाया है। कार्यक्रम की कवरेज के लिए दिल्ली दूरदर्शन की एक टीम मंगलवार को निडाना पहुंचेगी। यह टीम अपने कृषि दर्शन कार्यक्रम के लिए दो दिनों तक निडाना व लली तखेड़ा के खेतों में जाकर किसानों के अनुभव व उनकी गतिविधियों के शाट अपने कैमरे में कैद करेगी।

दूरदर्शन की इस पहल से सूचना एवं प्रौद्योगीकी के क्षेत्र में पिछड़े हुए क्षेत्रों के किसानों को काफी लाभ मिलेगा। कीट प्रबंधन के क्षेत्र में माहरत हासिल कर चुके निडाना व लली तखेड़ा के किसान अब टीवी के माध्यम से देश के अन्य क्षेत्रों के किसानों को कीटों की पढ़ाई का पाठ पढ़ाएंगे। दिल्ली दूरदर्शन ने इन किसानों की इस मुहिम को आगे बढ़ाने के लिए इन्हें अपने कार्यक्रम में शामिल करने की योजना को हरी झंडी दे दी है।

कार्यक्रम की कवरेज के लिए दिल्ली दूरदर्शन की एक टीम प्रोड्यूसर रघुनाथ सिंह के नेतृत्व में मंगलवार को निडाना पहुंचेगी। यह टीम अपने कृषि दर्शन कार्यक्रम के लिए इन किसानों के साथ इनके खेतों में जाकर लगातार दो दिनों तक इनकी गतिविधियों व इनके अनूभव को अपने कैमरे में कैद करेगी। कार्यक्रम की रिकार्डिंग के दौरान इस टीम के साथ कृषि वैज्ञानिक डा. आरएस सांगवान भी मौजूद रहेंगे, जो इन किसानों से समय-समय पर फसल में आने वाले कीटों व फसल पर पड़ने वाले उनके प्रभाव के बारे में जानकारी जुटाएंगे। इसके अलावा किसानों द्वारा अब तक उनकी फसलों में देखे गए मासाहारी व शाकाहारी कीटों पर विस्तार से चर्चा करेंगे, ताकि अधिक से अधिक किसानों को कीटों की पहचान हो सके और किसान बीमारी व कीटों के बीच के अंतर को समझ सकें। निडाना व लली तखेड़ा के किसान खेत में प्रयोगों कर पैदा किए गए अपने इस कीट ज्ञान को, दूरदर्शन के माध्यम से अन्य क्षेत्र के किसानों तक पहुंचाने का काम करेंगे। इनकी इस मुहिम में यहां की कीट मित्र महिला किसान भी इनका पूरा सहयोग करेंगी। दूरदर्शन की टीम द्वारा मंगलवार को निडाना गांव के खेतों में लगने वाली किसान खेत पाठशाला तथा बुधवार को लली तखेड़ा गांव की पूनम मलिक के खेत में लगने वाली महिला किसान खेत पाठशाला में जाकर इनके कीट ज्ञान अर्जित करने का फार्मूला व इनकी काम करने की गतिविधियों के शाट लिए जाएंगे। ताकि इनके फार्मूले को दूरदर्शन के माध्यम से अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाया जा सके और निडाना गांव के खेतों से उठी इस क्रांति की लहर को पूरे देश में फैलाया जा सके। दूरदर्शन द्वारा किसानों को जागरूक करने के लिए शुरू की गई इस पहल से एक तरफ जहां कीटनाशकों के प्रयोग में कमी आएगी, वहीं दूसरी ओर लोगों को खाने के रूप में परोसे जा रहे इस जहर से मुक्ति भी मिलेगी।

पिछड़े क्षेत्रों के किसानों को मिलेगा लाभ

दूरदर्शन द्वारा निडाना व लली तखेड़ा गांव के किसानों की इस मुहिम को अपने कृषि दर्शन कार्यक्रम में शामिल किए जाने पर सूचना एवं प्रौद्योगीकी के क्षेत्र में पिछड़े क्षेत्रों के किसानों को काफी लाभ मिलेगा। क्योंकि आज भी बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहां पर आज तक केवल इत्यादि सूचना पहुंचाने के साधन नहीं पहुंच पाए हैं। ऐसे क्षेत्रों में दूरदर्शन के अलावा सूचना पहुंचाने के ओर विकल्प नहीं हैं। इससे इन क्षेत्रों के लोगों तक समय पर नई-नई तकनीकों की जानकारियां नहीं पहुंच पाती हैं। जिस कारण ऐसे क्षेत्रों के लोग अब भी काफी पिछड़े हुए हैं। लेकिन अब दूरदर्शन पर निडाना व लली तखेड़ा के किसानों का कार्यक्रम प्रसारित होने के कारण इस क्षेत्र के किसान भी जानकारी जुटा कर कीटों की पहचान व परख कर सकेंगे।

22-08-12

12 गांव के किसानों ने चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत किए आंकड़े

बारिश नहीं तोड़ पाई किसानों के हौसले

खाप प्रतिनिधियों ने भी किया देशी कपास की फसल का अवलोकन

आज समाज नेटवर्क

जींद। हौंसले हो बुलंद तो मंजिल अपने आप कदम चूमने लगती है, और जो अपने हौंसले को तोड़ देता है उससे मंजिल दूर होती चली जाती है, ऐसा ही मानना है गांव निडाना में चल रही खेत पाठशाला के किसानों का। सोमवार रात हुई बारिश के बाद भी किसानों के हौंसले नहीं टूटे।

खेतों में पानी ज़मा होने के बावजूद मंगलवार को किसान खेत पाठशाला के नौंवे स्तर में कीटों व किसानों के बीच चल रहे मुकद्में की सुनवाई के लिए खाप प्रतिनिधियों सहित किसान भी पहुंचे। किसान खेत पाठशाला में खाप पंचायत की तरफ से हुड्डा खाप के प्रधान इंद्र सिंह हुड्डा, राखी बारह के प्रधान राजबीर सिंह, जाट धमार्थ जींद सभा के प्रधान रामचंद्र पहुंचे। खाप पंचायतों के प्रतिनिधि व किसानों ने गांव निडाना निवासी जोगेंद्र के खेत में बैठकर कीट मित्र किसानों के साथ कीटों के बारे में जानकारी हासिल की।

मंगलवार को नहीं हो सका सर्वेक्षण

सोमवार रात हुई तेज बारिश से खेत में पानी जमा होने से किसान कीटों का सर्वेक्षण नहीं कर सके। हालांकि 12 गांवों के किसानों ने अपने-अपने कीटों के बही खाते को चार्ट के माध्यम से पेश किया। किसी भी गांव में सफेद मक्खी 0.5 प्रतिशत; तेला 0.4 प्रतिशत, चूंरड़ा 1.8 प्रतिशत प्रति पत्ता पाया गया। जो कीट वैज्ञानिकों द्वारा तय किए गए मापदंडों से काफी कम है। किसानों की मेहनत के चलते उनके खेतों में एक छटांक भी कीटनाश की आवश्यकता नहीं पड़ी है।

खाप प्रतिनिधि को स्मृति चिह्न भेंट करता किसान महाबीर पूनिया।

कीट का अवलोकन किया

किसान रमेश मलिक ने कीटों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि मटकू बुगड़ा देखने में लाल बणिया कीट जैसा लगता है, लेकिन यह उससे बिल्कुल अलग है और उसका खून पीता है। मटकू बुगड़ा एक रात में छह लाल बणिया कीटों का खून पी लेता है। किसानों ने ध्यान से मटकू बुगड़ा की पहचान की। रमेश मलिक ने बताया कि यह दुर्लभ परभक्षियों में से एक है। जो लाल बणिया का खून पीकर उसे खत्म करता है।

कपास की फसल में मौजूद लाल बनिए का परभक्षी मटकू बुगड़ा।

मोबाइल पर दिखाया वीडियो

गांव ईंटल कलां के किसान चतर सिंह ने मंगलवार को हुई इस पाठशाला में किसानों को भी मोबाइल युग का अहसास करवा दिया, क्योंकि चतर सिंह ने अपने मोबाइल के माध्यम से खेत पाठशाला में किसानों को डायन मक्खी द्वारा सलेटी भूंड का शिकार करते हुए वीड़ियो रिकॉर्ड किया था, जिसे उसने पाठशाला में मौजूद खाप प्रतिनिधियों व किसानों को दिखाया।

देशी कपास का सर्वेक्षण

किसानों ने रणबीर सिंह की देशी कपास का सर्वेक्षण व अवलोकन किया। सर्वेक्षण के दौरान हर दूसरे पौधे पर डायन मक्खी, कातिल बुगड़ा, सिंगू बुगड़ा, भिरड़, ततैया व इंजनहारी बहुतायात में पाए गए। सर्वेक्षण के दौरान किसान अजीत सिंह ने पहली बार डायन मक्खी को देखा जो अपने पंजे में पतंगे को फंसाए कपास के पत्ते पर बैठी थी।

इस मौके पर गांव राजपुरा के पूर्व सरपंच बलवान व धर्मपाल के मुंह से बरबस ही निकल गया कि फसल में इतने कीट हैं, लेकिन कोई नुकसान नहीं पहुंचा रहे हैं। किसान रणबीर ने बताया कि वह सात साल से देशी कपास की खेती कर रहा है। उसने कभी भी अपनी फसल में एक बूंद भी कीटनाशक का प्रयोग नहीं किया है। बाद में किसानों ने पाठशाला में आए खाप प्रतिधिनियों को स्मृति चिह्न भेंट किए।

13-08-12

निडाना गांव आएगा पंजाब के किसानों का दल

जहर मुक्त खेती का सीखेंगे गुर

कीट किसान पाठशाला में पहुंचे रहे दूसरे प्रदेश के किसान

नरेंद्र कुंडू

जींद। जिले के निडाना गांव के कीट मित्र किसानों की मेहतन अब रंग लाने लगी है। निडाना गांव के खेतों से शुरू हुई जहरमुक्त खेती की गूंज अब जिले ही नहीं बल्कि दूसरे प्रदेशों में भी सुनाई देने लगी है। जिससे प्रेरित होकर दूसरे प्रदेशों के किसान भी अब कीटनाशक रहित खेती के गुर सीखने के लिए निडाना की ओर रुख करने लगे हैं।

सोमवार को जिले के नवां शहर (पंजाब) के 35 किसानों का एक दल कृषि अधिकारियों के साथ दो दिवसीय अनावरण यात्रा पर निडाना की 12 ग्रामी किसान खेत पाठशाला में पहुंच रहे हैं। इस दौरान किसानों का यह ग्रुप निडाना के कीट मित्र किसानों से कीट प्रबंधन पर चर्चा करेगा तथा कीट नियंत्रण व किसान खेत पाठशाला के तौर तरीके सीखेगा। इन किसानों के रहने व खाने का प्रबंध भी निडाना गांव के किसान करेंगे। इस दौरान इनके बीच विश्व प्रसिद्ध कीट वैज्ञानिक डा. सरोज जयपाल भी मौजूद रहेंगी।

किसानों को कीट प्रबंधन के गुर सीखा कर लोगों की थाली में बढ़ते जहर को कम करने के लिए निडाना गांव के किसानों की शुरू की गई यह मुहिम दूसरे प्रदेशों में भी फैलने लगी है। निडाना के खेतों से शुरू हुई कीटनाशक रहित खेती की इस क्रांति को पंजाब में फैलाने का बीड़ा अब जिला नवां शहर के किसानों ने उठाया है। इस क्रांति को पंजाब में सफल बनाने के लिए पंजाब का कृषि विभाग भी किसानों का पूरा सहयोग कर रहा है। वहां के कृषि विभाग के अधिकारियों ने नवां शहर के किसानों को कीट प्रबंधन तथा कीटनाशक रहित खेती की ट्रेनिंग दिलाने के लिए 35 किसानों के एक दल का गठन किया है। यह दल अब सोमवार को दो दिवसीय ट्रेनिंग के लिए निडाना में पहुंच रहा है। खास बात यह है कि पंजाब से आने वाले इन किसानों के रात के ठहरने का प्रबंधन किसी चौपाल, स्कूल या धर्मशाला में नहीं बल्कि निडाना के किसानों ने खुद अपने ही घर में किया है। चार या पांच का समूह एक-एक घर में ठहरेगा, ताकि नवां शहर के ये किसान खाना खाने के बाद रात को निडाना के किसानों के परिवार के साथ बैठकर उनके खेती के तौर-तरीकों व कीट प्रबंधन पर उनके साथ खुल कर चर्चा कर सकें।

ये रहेगा किसानों का शेड्यूल

दो दिवसीय यात्रा पर आने वाले किसानों का समय व्यर्थ न जाए इसके लिए निडाना के किसानों ने पहले से ही पूरा शेड्यूल तैयार कर रखा है। पंजाब के किसान सोमवार सायं 5-6 बजे के करीब निडाना पहुंचेंगे। यहां पहुंचने के बाद रात को खाना खिलाने के बाद इन किसानों को लैपटॉप पर कीटों की पहचान के लिए कीटों के चित्र दिखाए जाएंगे। इसके बाद मंगलवार सुबह आठ बजे ये किसान निडाना गांव की किसान खेत पाठशाला में कीट सर्वेक्षण में भाग लेंगे, यहां कीट-बही खाता तैयार करना सीखेंगे। इसके बाद निडानी गांव के किसानों के घर लंच करेंगे। यहीं पर लंच के बाद निडानी के जयभगवान व महाबीर घूनिया के खेतों का सर्वेक्षण कर इनके द्वारा बोई गई कपास व मूंग की मिश्रित खेती तथा घर से तैयार कर बोई गई बीटी कपास की फसल का निरीक्षण करेंगे। इसके बाद अलेवा में प्रगतिशील किसान जोगेंद्र सिंह लोहान के खेत में जाकर कीटनाशक रहित धान की फसल की तुलना आस-पड़ोस की फसलों के साथ करेंगे। यहां पर जलपान कर वापस पंजाब के लिए रवाना हो जाएंगे।

मुख्य कृषि अधिकारी ने किया था निरीक्षण

निडाना गांव में चल रही किसान खेत पाठशाला के चर्चे सुनने के बाद नवां शहर (पंजाब) के मुख्य कृषि अधिकारी डा. सर्वजीत कलंदरी मई में यहां स्वयं निरीक्षण के लिए आए थे, ताकि पाठशाला की वास्तविकता को परख सकें। मुख्य कृषि अधिकारी ने निडाना के किसानों के कीट ज्ञान को खूब परखने के बाद ही अपने जिले के किसानों की टीम को यहां भेजने का निर्णय लिया था।

09-08-2012

महिलाओं ने किया कीटों का अवलोकन

ललीतखेड़ा गांव में लगी महिला किसान पाठशाला

कपास के फूल को खाती तेलन नामक कीट व कपास की फसल का निरीक्षण करती महिला किसान।

जींद। ललीतखेड़ा गांव की किसान पूनम मलिक के खेत में चल रही महिला किसान पाठशाला में बुधवार को महिलाओं ने बूंदाबांदी के मौसम में भी कीट अवलोकन एवं निरीक्षण किया। कीट निरीक्षण के दौरान पाया कि अभी तक कपास की फसल में मौजूद रस चूसक कीट सफेद मक्खी, हरा तेला व चूरड़ा फसल में आर्थिक कगार को पार नहीं कर पाए हैं। प्रेम मलिक ने पाठशाला में मौजूद महिला किसानों के समक्ष कपास के खेत में मौजूद तेलन के प्रति अपनी आशंका जताते हुए पूछा की तेलन कपास की फसल में क्या करती है। महिलाओं ने प्रेम मलिक की समस्या का समाधान करने के लिए फसल में तेलन के क्रियाकलापों को परखा। तो पाया कि तेलन अधिकतर कपास के फूलों की पंखुड़ियों व फूल के नर पुंकेशर ही खाते हैं, स्त्री पुंकेशर सुरक्षित था।

महिलाओं ने प्रेम मलिक की समस्या का समधान करते हुए कहा कि जब तक फूल में स्त्री पुंकेशर सुरक्षित है तब तक फसल के उत्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। मीना मलिक ने बताया कि तेलन अपने अंडे जमीन में देती है और इसके अंडों में से निकलने वाले बच्चे दूसरे कीटों के अंडों व बच्चों को खाकर अपना गुजारा करते हैं। इनमें खासकर टिड्डे के बच्चे शामिल हैं। इसलिए जिस वर्ष कपास में तेलन की संख्या ज्यादा होगी उस वर्ष टिड्डे कम मिलेंगे। रणबीर मलिक ने कहा कि यह तेलन पिछले वर्ष उसकी देसी कपास में भी आई थी, जिसे देखकर उसके माथे पर चिंता की लकीरे पैदा हो गई थी, लेकिन यह जल्द ही कपास के फूलों को छोड़कर जंतर (ढैचे) के फूलों पर चली गई थी। लेकिन इसमें ताज्जुब की बात यह है थी कि तेलन द्वारा जंतर पर चले जाने के बाद भी जंतर की एक भी फली खराब नहीं हुई। सुषमा मलिक ने बताया कि कपास की फसल का जीवन चक्र 170 से 180 दिन का होता है और अब फिलहाल कपास की फसल 100 दिन के लगभग हो चुकी है। लेकिन अब तक पाठशाला में आने वाली किसी भी महिला को अपनी फसल में एक छटांक भी कीटनाशक के प्रयोग की जरुरत नहीं पड़ी है। इसलिए तो कहते हैं कीट नियंत्रणाय कीट हिः अस्त्रामोघा। अर्थात कीट नियंत्रण में कीट ही अचूक अस्त्र हैं।

08-08-2012

कीटों के पास भी वायु व थल सेना की फौज

किसानों ने ढूंढे कपास की फसल को नुकसान पहुंचाने वाले तीन मेजर कीट

आज समाज नेटवर्क

जींद। किसान-कीट के विवाद की सुनवाई के लिए मंगलवार को निडाना गांव की किसान खेत पाठशाला में खाप पंचायत की सातवीं बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता बराह कलां बारहा खाप के प्रधान एवं सर्व खाप पंचायत के संयोजक कुलदीप ढांडा ने की।

बैठक में मलिक खाप के प्रधान दादा बलजीत मलिक, चोपड़ा खाप नरवाना के प्रधान अजमेर सिंह चोपड़ा तथा सतरोल खाप के प्रधान सूबेदार इंद्र सिंह विशेष रूप से मौजूद उपस्थित रहे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कुलदीप ढांडा ने कहा कि जिस तरह इंसानों के पास अपनी सुरक्षा के लिए वायु सेना व थल सेना है, ठीक उसी प्रकार कीटों के पास भी वायु सेना व थल सेना है। कीटों की थल सेना में दीमक की पूरी फौज है, जो जमीन के अंदर रहकर अपनी लड़ाई लड़ती है और वायु सेना में टिड्डी हैं। अगर खुदा न खास्ता कीटों की वायु सेना ने हमला कर दिया तो दूर-दूर तक कुछ नहीं बचेगा।

टिड्डियां जहां से गुजरती हैं वहां फसल, पेड़-पौधे सबकुछ खत्म कर देती हैं, इसलिए कीटों का पलड़ा भारी है और किसान-कीट की इस जंग में जीत भी कीटों की ही निश्चित है। पाठशाला के संचालक डा. सुरेंद्र दलाल ने कहा कि किसानों के पास अपना खुद का ज्ञान नहीं है तथा कुछ लोगों ने अपने निजी स्वार्थ के वशीभूत होकर किसानों में भय व भ्रम की स्थिति पैदा कर दी है। जिस कारण किसान समय पर स्वयं निर्णय नहीं ले पाता और किसान को अपनी समस्या के समाधान के लिए

दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। किसानों को इस जंग में जीत हासिल करने के लिए खुद का ज्ञान पैदा करना होगा। डा. दलाल ने कहा कि कीटों पर काम कर रहे किसानों ने अब तक 43 किस्म के शाकाहारी कीटों की पहचान की है। इन कीटों को चार भागों में बांटा गया है। पहले भाग में रस चूसने वाले, दूसरे भाग में पर्णभक्षी, तीसरे भाग में फूलाहारी व चौथे भाग में फलाहारी कीटों को रखा गया है। इन 43 कीटों में से सिर्फ तीन किस्म के ही ऐसे मेजर कीट हैं, जो फसल का रस चूसते हैं और फसल को इनसे सबसे ज्यादा नुकसान का खतरा रहता है। इसलिए इस पाठशाला में कीटों का पक्ष रखने के लिए हर सप्ताह नए-नए प्रयोग किए जाते हैं और फसल में मौजूद इन तीनों मेजर कीटों की गिनती करा कर कीट-बही खाता तैयार किया जाता है। अब तक तैयार किए गए कीट बही खाते से प्राप्त आंकड़ों से यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि अब तक कपास की फसल में किसी भी प्रकार के कीटनाशक की जरूरत नहीं है। जिस खेत में यह प्रयोग चल रहा है वह फसल भी अभी तक पूरी तरह से स्वस्थ है। राजपुरा पैण से आए किसान बलवान ने बताया कि कीटों की पढ़ाई शुरू करने से पहले उनके गांव के किसान कपास की भस्मासुर के नाम से मशहूर मिलीबग से ज्यादा डरते थे। मलिक खाप के प्रधान दादा बलजीत मलिक ने किसानों द्वारा शुरू किए गए इस अनोखे कार्य की सरहाना की।

इस अवसर पर पाठशाला में निडाना, निडानी, ललीतखेड़ा, चाबरी, सिवाहा, ईगराह, खरकरामजी, ईंटलकलां, राजपुरा पैण सहित कई गांवों के किसान मौजूद थे।

मिलीबग से भय समाप्त

फसल में मिलीबग की दस्तक के साथ ही अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग करते थे, लेकिन जब से किसानों को कीटों की पहचान होने लगी है तब से किसानों का मिलीबग के प्रति जो भय था वो निकल गया है। अब उनके गांव के किसानों ने फसल में कीटनाशकों की जगह डीएपी, यूरिया व जिंक का छिड़काव करते हैं। पाठशाला में चल रहे पत्ते काटने के प्रयोग को आगे बढ़ाते हुए खाप प्रतिनिधियों से पत्ते कटवाए गए। इसके साथ ही किसानों ने फसल में अवलोकन के दौरान देखे दर्शयों को किसानों के साथ सांझा किया।

05-08-2012

पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

सत्यमेव जयते की टीम ने ललित खेड़ा गांव में चल रही पाठशाला को किया कैमरे में कैद

पर्दे पर दिखेंगी कीटों की मास्टरनी

नरेंद्र कुंडू

जींद। कीटों के वैद्य के नाम से मशहूर निडाना व ललीतखेड़ा की महिलाएं अब सत्यमेव जयते के पर्दे पर नजर आएंगी। कीटों की इन मास्टरिनयों से रू-ब-रू होने के लिए शनिवार को दिल्ली से सत्यमेव जयते की टीम ललीतखेड़ा गांव के खेतों में चल रही महिला किसान पाठशाला पहुंची। इस दौरान टीम ने लगभग आधे घंटे तक ललीतखेड़ा व निडानी की महिलाओं से कीटनाशक रहित खेती पर सवाल-जवाब किए व उनके अनुभव को अपने कैमरे में कैद किया।

निडाना व ललीतखेड़ा की महिलाएं अब सत्यमेव जयते के पर्दे से दुनिया के सामने खेतों से पैदा किए गए अपने कीट ज्ञान को बांटेगी। इसकी

पाठशाला में महिलाओं को कैमरे में शूट करते टीम के सदस्य।

कवरेज के लिए सत्यमेव जयते की एक टीम शनिवार को ललीतखेड़ा गांव में चल रही महिला किसान पाठशाला में पहुंची। टीम की रिपोर्टर रितू भारद्वाज ने लगातार आधे घंटे तक इन महिलाओं के बीच बैठकर कीटनाशक रहित खेती के इनके ज्ञान को परखा तथा कैमरा मैन कपील सिंह ने इनके अनुभव को अपने कैमरे में कैद किया। टीम ने महिलाओं से बिना कीटनाशक के फसल से अधिक पैदावार लेने का फार्मूले पर काफी देर तक चर्चा की। महिलाओं ने भी बिना किसी झिझक के खुलकर टीम के सामने अपने विचार रखे। कीटों की मास्टर ट्रेनर सविता, मनीषा, मीना मलिक ने बताया कि उन्होंने 142 प्रकार के कीटों की पहचान कर ली है। जिसमें 43 किस्म के कीट शाकाहारी व 99 किस्म के कीट मांसाहारी होते हैं। शाकाहारी कीट फसल में रस चूसकर व पत्ते खाकर अपनी वंशवृद्धि करते हैं, लेकिन मांसाहारी कीट शाकाहारी कीटों को खाकर अपना गुजारा करते हैं। इस प्रकार मांसाहारी कीट शाकाहारी कीटों को चट कर देते हैं। कीटों के जीवनचक्र के दौरान किसान को कीटनाशक का प्रयोग करने की जरूरत नहीं पड़ती। आज किसान को अगर जरूरत है तो वह है कीटों का ज्ञान अर्जित करने की। कीट मित्र किसान रणबीर मलिक ने टीम के पूछे गए बिना कीटनाशक का प्रयोग किए अच्छी पैदावार लेने के सवाल का जवाब देते हुए मलिक ने बताया कि अच्छी पैदावार के लिए दो चीजों की जरूरत होती है। पहली तो सिंचाई के लिए अच्छे पानी व दूसरी खेत में पौधों की पर्याप्त संख्या। खेत में अगर पौधों की पर्याप्त संख्या होगी तो अधिक पैदावार अपने आप ही मिल जाएगी। किसान रामदेवा ने टीम के सामने कीटनाशक का प्रयोग न करने वाले एक किसान का ताजा उदहारण रखते हुए बताया कि उनके पड़ोसी किसान कृष्ण की गन्ने की फसल में काली कीड़ी का काफी ज्यादा प्रकोप हो गया था, लेकिन कृष्ण ने एक बार भी अपनी फसल में कीटनाशक का प्रयोग नहीं किया। कुछ दिन बाद काली कीड़ी को मासाहारी कीटों ने चट कर उसका खात्मा कर दिया। इस प्रकार किसान का कीटनाशक पर खर्च होने वाला पैसा भी बच गया और उसकी फसल जहर से भी बच गई। बाद में महिलाओं ने टीम को हथजोड़ा कीट का चित्र स्मृति चिह्न के रूप में भेंट किया।

महिलाओं की कायल हो गई टीम

टीम की रिपोर्टर रितू भारद्वाज कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग के दौरान महिलाओं से सवाल-जवाब करते समय उनके अनुभव को देखकर उनकी कायल हो गई। रितू ने इन महिलाओं से प्रेरणा लेकर इस अभियान की जमीनी हकीकत से रू-ब-रू होने के लिए महिलाओं से दोबारा अपने पिता के साथ उनकी पाठशाला में आने का वायदा किया।